National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 275-277
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Bishwaketu Barman
Research Scholar , JRF
Dept. of Research and Publication,
National Sanskrit University,
Tirupati, A.P.

Correspondence:
Bishwaketu Barman
Research Scholar , JRF
Dept. of Research and Publication,
National Sanskrit University,
Tirupati, A.P.

कालीपद तर्काचार्य की वाग्वैदग्ध्यपूर्ण स्वारस्वत साधना पर न्याय और वैशेषिक दर्शन का प्रभाव।

Bishwaketu Barman

भूमिका:

सृष्टिकर्ता की रचना में सर्वोत्तम प्राणी है मनुष्य। सोचने-समझने की शक्ति ने ही उसे अन्य प्राणियों से अलग किया है। वैदिक काल के विधि-नियमों से बंधे की सीमाओं में बंधे विना, मनुष्य सृष्टि के रहस्य को जानने की चेष्टा में प्रवृत्त हुआ, जिसका प्रमाण हमें आरण्यकों और उपनिषदों में मिलता है। समय के साथ यह चिंतन शक्ति परिपक्व होती गई तथा ये दार्शनिक विचारधाराओं में परिणत हुई।

किसी भी दार्शनिक प्रणाली का परिचय देने से पूर्व 'दर्शन' शब्द के वास्तविक अर्थ पर विचार करना आवश्यक है। '√ दृश्' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय के योग से 'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति हुई है। 'दृश्' का अर्थ है—देखना या प्रेक्षण करना, अर्थात् सूक्ष्म रूप से अवलोकन करना। यदि 'ल्युट्' प्रत्यय भाववाचक हो तो 'दर्शन' का अर्थ 'देखना' होता है, और यदि करणवाचक हो तो इसका अर्थ 'जिसके द्वारा देखा जाए' अर्थात् 'दर्शनेंद्रिय' होता है। परंतु दर्शन केवल इंद्रियबोध तक सीमित नहीं है; वह वह ज्ञान है, जो बाह्य एवं आंतरिक जगत के सूक्ष्म एवं अव्यक्त तत्त्वों को स्पष्ट रूप में प्रकट करता है।

भारतीय दर्शन में नौ दर्शनों का उल्लेख मिलता है। ये सभी दर्शन दुःख निवृत्ति तथा मोक्ष मार्ग प्रशस्त करते हैं। वेदों की प्रामाणिकता के आधार पर इन्हें दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है – आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक से षड्दर्शन का बोध होता है- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत। नास्तिक दर्शन - चार्वाक, बौद्ध और जैन इन तीन दर्शनों को समझा जाता है। षड्दर्शन के अन्तर्गत – सांख्य और योग, न्याय और वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त इन्हें समानतन्त्रीय दर्शन कहा जाता है क्योंकि उनकी विचारधारा और मतों में कई समानतायें पाई जाती हैं। आस्तिक दर्शन में ऐसे ही दो दर्शन हैं – न्याय और वैशेषिक।

'न्याय' शब्द का अर्थ है—तर्क या अनुमान। इसके प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं, जिन्हें 'अक्षपाद' भी कहा जाता है। उनके द्वारा प्रणीत 'न्यायसूत्र' इस दर्शन का मूल ग्रन्थ है। कालान्तर में न्याय दर्शन दो धाराओं में विभाजित हुआ—प्राचीनन्याय और नव्यन्याय।

इसी प्रकार वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं। इस दर्शन में पदार्थ के सूक्ष्म तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है। 'प्रशस्तपादभाष्य' इस परम्परा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिस पर अनेक टीकाएँ लिखी गईं।

यद्यपि न्याय एवं वैशेषिक दर्शन पर अनेक ग्रन्थ रचे गए, परन्तु नव्य न्याय की जटिलता के कारण इनका अध्ययन कठिन होता गया। ऐसे में कुछ महान विद्वानों ने इस कठिन शास्त्र को सरल एवं बोधगम्य बनाया। उन्हीं में महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

कालीपद तर्काचार्य का जीवन परिचय :

महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य का जन्म 1888 ई. में अविभाजित बंगाल के फरीदपुर जिले के ‘उनाशिया’ ग्राम में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता हरिदास तर्कतीर्थ एवं माता सीतासुन्दरी देवी थीं। वे अपने माता-पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे। यह क्षेत्र उस समय संस्कृत विद्या के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ अनेक विद्वानों का जन्म हुआ।

कालीपद तर्काचार्य का विद्या-अध्ययन

कालीपद तर्काचार्य को उनके पिता प्रारंभिक शिक्षा हेतु कोलकाता ले गए, परन्तु अस्वस्थता एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रति अरुचि के कारण वे पुनः गाँव लौट आए और टोल शिक्षा से अध्ययन प्रारम्भ किया। उन्होंने कालीकान्त शिरोमणि से व्याकरण तथा भुवनेश्वर विद्यालङ्कार एवं हरिपद विद्यारत्न से काव्य एवं अलङ्कार का अध्ययन किया।

बाद में उन्होंने शिवचन्द्र सर्वभौम से न्यायशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। ‘संस्कृत न्यायतीर्थ’ परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर उन्हें ‘तर्काचार्य’ की उपाधि प्रदान की गई।

कालीपद तर्काचार्य का कर्मजीवन

उन्होंने कोलकाता संस्कृत साहित्य परिषद में शिक्षक के रूप में कार्य प्रारंभ किया तथा उप-सम्पादक के रूप में भी योगदान दिया। 1931 में संस्कृत कॉलेज, कोलकाता में सह-आचार्य नियुक्त हुए। 1941 में ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें ‘महामहोपाध्याय’ की उपाधि प्रदान की गई।

स्वतन्त्र भारत में 1961 में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। 1972 में वर्धमान विश्वविद्यालय ने उन्हें D.Litt. की उपाधि प्रदान की। उसी वर्ष 27 जुलाई को उनका निधन हुआ।

न्याय और वैशेषिक दर्शन में कालीपद तर्काचार्य की प्रतिष्ठित प्रतिभा-

1. महेशचन्द्र न्यायरत्न की रचित 'नव्यन्यायभाषाप्रदीप' ग्रन्थ स्वकृत 'सुप्रभा' टीका सहित सम्पादन किया।
2. 'प्रशस्तपादभाष्य' के द्रव्य अध्याय का स्वकृत 'सूक्तिदीपिका' नामक टीका सहित सम्पादन किया।
3. कणाद तर्कबागीश की रचित 'भाषारत्नम्' ग्रन्थ का स्वकृत 'रत्नलक्ष्मी' टीका सहित सम्पादन किया।
4. गदाधर भट्टाचार्य के 'मुक्तिबाद' ग्रन्थ के साथ स्वकृत 'मुक्तिदीपिका' टीका सहित सम्पादन किया।
5. भवानन्द सिद्धान्तबागीश के 'तत्त्वचिन्तामणिदीधितिप्रकाश' ग्रन्थ का सम्पादन किया।
6. हरिराम तर्कबागीश के 'मुक्तिबादविचार' ग्रन्थ के साथ स्वकृत 'मुक्तिलक्ष्मी' नामक भाष्य सम्पादन किया।

इसके अतिरिक्त, 'जातिबाधकविचार', 'प्रवचनत्रयी', 'अक्षपाद दर्शन', 'न्यायपरिभाषा' आदि ग्रन्थों का सम्पादन महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य द्वारा किया गया।

'नव्यन्यायभाषाप्रदीप' ग्रन्थकी कालीपद तर्काचार्य कृत 'सुप्रभा' टीका सहित समीक्षा –

भारतीय न्याय शास्त्र, विशेषतः नव्य न्याय ग्रन्थअत्यंत दुरूह हैं। नव्य न्याय ग्रंथों को समझना प्रारम्भिक पाठकों के लिए सहज नहीं होता, इसलिए नव्य न्याय ग्रन्थों के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर महेशचन्द्र न्यायरत्न द्वारा 'नव्यन्यायभाषाप्रदीप' ग्रन्थकी रचना की गई। इस ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य यह था की नव्यन्याय के तकनीकी शब्दों (परिभाषाओं) से पाठकों को परिचित कराया जाए, क्योंकि इन परिभाषाओं की जानकारी के बिना न्याय शास्त्रों के तत्वों की समझ सम्भव नहीं हो सकती। नव्यन्याय ग्रन्थ की इन्हीं जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए, उस समय के संस्कृत कॉलेज के अध्यक्ष श्री विष्णुपद भट्टाचार्य महोदय ने महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य महाशय को इस ग्रन्थका बांग्ला अनुवाद एवं टीका सहित सम्पादन करने का उत्तरदायित्व सौंपा। महामहोपाध्याय ने सहर्ष यह उत्तरदायित्व स्वीकार किया और 'सुप्रभा' नामक बांग्ला टीका सहित इस ग्रन्थके पुनर्मुद्रण के लिए श्री विष्णुपद भट्टाचार्य को सौंप दिया। यहाँ ग्रन्थवर्ष 1956 मैं कोलकाता संस्कृत कॉलेज से प्रकाशित हुआ। सम्पादन के उपरान्त, बांग्ला अनुवाद और 'सुप्रभा' टीका सहित यह ग्रन्थछात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए एक उपयुक्त और उपयोगी ग्रन्थके रूप में प्रतिष्ठित हुआ। इस ग्रन्थ में सबसे पहले 'धर्म' की परिभाषा दी गई है। धर्म को जाति और उपाधि के भेद से दो प्रकार में विभाजित किया गया है। उपाधि को सखण्ड और अखण्ड - इस प्रकार दो भेदों में विभाजित किया गया है। सम्बन्ध को साक्षात् और परम्परा के आधार पर दो प्रकार में वर्गीकृत किया गया है। सम्बन्ध वृत्तिनियामक और वृत्ति-अनियामक भी हो सकते हैं। महामहोपाध्याय ने अपनी 'सुप्रभा' टीका में 'पर्याप्ति' नामक सम्बन्ध के विषय में विशेष चर्चा की है। उन्होंने प्राचीन और नव्य न्याय सूत्रों को अव्याप्ति,अतिव्याप्ति और असंभव जैसे दोषों से मुक्त करते हुए स्पष्ट रूप से बांग्ला भाषा में व्याख्या की है।

'प्रशस्तपादभाष्य' की 'सूक्तिदीपिका' टीका पर चर्चा-

मार्कण्डेय मुनि के पुत्र महर्षि कणाद 'वैशेषिक' दर्शन के प्रणेता माने जाते हैं। 'वैशेषिक' दर्शन भारत के छह आस्तिक दर्शनों में से एक है। इस दर्शन पर अनेक भाष्य रचित हुआ हैं, लेकिन 'प्रशस्तपादभाष्य' ही सबसे प्राचीन भाष्य माना जाता है। महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य ने 'प्रशस्तपादभाष्य' पर जगदीश तर्कालङ्कार कृत 'सूक्तिदीपिका' टीका सहित 'प्रशस्तपादभाष्य' का सम्पादन किया। यह ग्रन्थ"कोलकाता संस्कृत साहित्य परिषद" से प्रकाशित हुआ था, परंतु इसका प्रकाशन वर्ष निर्दिष्ट नहीं है। कालीपद तर्काचार्य ने न केवल स्वयं इस ग्रन्थ की टीका लिखी, बल्कि इसकी व्याख्या और

बांगला अनुवाद भी प्रस्तुत किया। इन्होंने अपनी 'सूक्तिदीपिका' टीका की भूमिका में 'विशेष' शब्द के पांच भिन्न अर्थ को ग्रहण किया है। इसके अतिरिक्त तत्त्वज्ञान की प्रकृति, द्रव्य के वर्गीकरण, सामान्य और विशेष के भेद, समवाय के विभाजन आदि पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की है। वैशेषिक दर्शन के अनुयायियों द्वारा स्वीकृत विभिन्न प्रकार की 'टोपोलांजी'(Topology)का भी उन्होंने इस ग्रन्थमें न्यायसंगत तरीके से विवेचन किया है। तर्काचार्य ने ग्रन्थके उत्तरार्ध में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन आदि अन्य विभागों की भी गहन चर्चा की है।

कालीपद तर्काचार्य विरचित 'अक्षपाददर्शन' की समीक्षा -

विशिष्ट न्याय दर्शनशास्त्री पंडित कालीपद तर्काचार्य विरचित 'अक्षपाददर्शन' ग्रन्थ का प्रकाशन वर्ष 1975 में कोलकाता संस्कृत कॉलेज से प्रकाशित हुआ था। यह ग्रन्थ मुख्यतः गौतम के न्यायसूत्रों की विश्लेषणात्मक व्याख्या है। इस ग्रन्थ में प्रतिपादित मूल विषय है - "तत्वज्ञान के माध्यम से नि:श्रेयस की प्राप्ति होती है" यहाँ 'तत्वज्ञान' से तात्पर्य आत्मा सहित द्वादश प्रमेयों के ज्ञान से है। प्रमेयों का ज्ञान प्रमाणों पर निर्भर करता है। इस कारण ग्रन्थ में न्याय द्वारा स्वीकृत चार प्रमाणों की भी चर्चा की गई है। जब कोई व्यक्ति श्रवण, मनन, निदिध्यासन की पद्धति का अनुकरण करके आत्मा का ज्ञान प्राप्त करता है तब वह नि:श्रेयस को प्राप्त करता है। इन सभी विषयों की इस ग्रन्थमें विस्तारपूर्वक एवं गहन चर्चा की गई है।

महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य द्वारा सम्पादित अन्य उल्लेखनीय ग्रन्थावली -

कणाद तर्कबागीश द्वारा रचित ग्रन्थ'भाषारत्नम्' -

इस ग्रन्थ में वैशेषिक मतानुसार पदार्थ तत्व का विवेचन किया गया है। महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य ने इस ग्रन्थका 'रत्नलक्ष्मी' नामक अपनी टीका सहित सम्पादन किया था। यह ग्रन्थ 1936 ई. मे कोलकाता "संस्कृत साहित्य परिषद" से प्रकाशित हुआ था।

'नवमुक्तिवाद' गदाधर भट्टाचार्य कृत -

महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य ने इस ग्रन्थ का शिवराम भाष्य सहित सम्पादन किया था। साथ ही, तर्काचार्य ने मूल बंग्ला पाठ पर अपनी स्वलिखित व्याख्याएं भी जोड़ीं। इस ग्रन्थ का केन्द्रीय विषय है - मोक्ष की धारणा। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें मोक्ष की विभिन्न अवधारणाओं का पतंजलि, कपिल, भर्तृहरि आदि अनेक दार्शनिकों द्वारा समर्थित किया गया।

इसके अतिरिक्त, वर्ष 1964 में वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय के आमंत्रण पर उन्होंने दीक्षांत समारोह में भाग लिया था। वहां महामहोपाध्याय कालीपद की अध्यक्षता में तीन व्याख्यानों का आयोजन किया गया। बाद में इन तीनों व्याख्यानों को वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 'प्रवचनत्रयी' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया - इन व्याख्यानों के विषय थे -

1. नव्यन्यायपारिभाषिकपदार्थाः।
2. न्यायवैशेषिकदर्शनयोः पृथग् दर्शनत्वम्।
3. प्राचीनन्यायनव्यन्याययोः सैद्धान्तिकं पृथकत्वम्।

उपसंहार :

असाधारण प्रतिभा के धनी महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य न केवल एक दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध थे, बल्कि महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक, अनुवाद साहित्य आदि क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का प्रभावशाली परिचय दिया। उन्होंने 'सत्यानुभवम्', 'योगिभक्त-चरितम्' तथा 'आशुतोषावदानम्' नामक तीन महाकाव्य की रचना की। इसके अतिरिक्त 'मन्दाक्रान्तावृत्तम्' तथा 'आलोकतिमिरवैरम्' नामक दो खंडकाव्य तथा 'प्रशान्तरत्नाकरम्', 'मानवकगौरवम्', 'नलदमयन्तीम्' और 'स्यामन्तकोद्धारम्' नामक चार दृश्यकाव्य भी उन्होंने रचे। इन सभी ग्रन्थों के माध्यम से संस्कृत साहित्य जगत में महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य की विलक्षण निपुणता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। इन्होंने कुछ महत्वपूर्ण अनुवाद ग्रन्थ भी रचे, जिनमें 'गीताञ्जलिछाया', 'गीताप्रतिछाया', 'श्रीश्रीचण्डीप्रतिछाया' और 'युगलाङ्गरीयम्' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा वे कई संस्कृत पत्रिकाओं से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे, क्योंकि उस समय पत्रिकाएं संस्कृत भाषा के प्रसार और संवर्धन हेतु एक महत्वपूर्ण माध्यम थीं। इन्हीं पत्रिकाओं के माध्यम से महामहोपाध्याय कालीपद तर्काचार्य के असंख्य लेख प्रकाशित हुए। उन पत्रिकाओं में "संस्कृत साहित्य परिषद पत्रिका" और "आर्यप्रभा" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

Reference

1. Sri Sri Sitaram Omkarnath Sanskrit Sahitya Samsad. The Great Pandits: Twentieth Century Bengal's Contribution to Classical Indian Philosophy. Research Project. Sponsored by the Department of Higher Education, Government of West Bengal.
2. Nyayaratna, Maheshchandra. Navya-Nyaya-Bhasha-Pradipa (With Suprabha Commentary and Bengali Translation). Edited by Mahamahopadhyaya Kalipada Tarkacharya, Sanskrit College, 1973.
3. Bhattacharyya, Dineshchandra. Bangalir Saraswata Abodan(First Volume: Bange Navya-Nyaya Charcha). Kolkata: Bangiya Sahitya Parishad, 1358 B.S.